।।अथ बारे मास ।। ।। सरद रुत ।।

राग मलार

पिउजी तमे सरदनी रुते रे सिधाव्या, हांरे मारा अंगडामां विरह वन वाव्या।
ए वन खिण खिण कूपलियो मूके, हां रे मारूं तेम तेम तनडूं सूके।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

शब्दार्थ—हे पिउजी ! आपने भौतिक तन शरद ऋतु में छोड़ा। मेरे तन में विरह के जंगल का बीज बोया। जैसे-जैसे यह विरह रूपी जंगल की पल-पल कोपलें निकलने लगी हैं, वैसे-वैसे ही मेरा तन सूख रहा है।

भावार्थ—हे मेरे धाम धनी! आपने शरद ऋतु में श्री देवचन्द्रजी का तन जैसे ही छोड़ा, वैसे ही मेरे तन में वियोग का विरह पैदा हो गया। जैसे-जैसे वियोग के नए-नए विचार आते हैं एवं आपके गुण याद आते हैं वैसे-वैसे ही मेरा तन विरह में जलकर सूख रहा है। अब मैं पिया-पिया करके आपको पुकार रही हूं।

वाला हूं तो पिउ पिउ करी रे पुकारूं, पिउजी विना दोहेला घणां रे गुजारूं।
हूं तो दुखडा मांहें ना माहेंज मारूं, हूं तो निस्वासा अंग मा उतारूं।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे वालाजी! आपके बिना अत्यन्त कठिनाई से समय बिता रही हूं। इस विरह के दुःख को मैं अन्दर ही अन्दर पी रही हूं (सहन कर रही हूं) ठंडी सांसें ले रही हूं। अब मैं पिया-पिया करके आपको पुकार रही हूं।

वाला मारा भादरवे ते नदी नाला भरिया, पिउजी निरमल जल रे उछलिया।
वाला मारा गिर डूंगर खलखलिया, पिउजी तमे एणे समे हजिए न मलिया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! भादों (भाद्रपद) के महीने में नदी नाले सब भर गए हैं और उनमें निर्मल जल उछल रहा है। पहाड़ों से गिरते हुए पानी की कल-कल की आवाज आती है। ऐसे समय में, हे प्रीतम! मुझे आप नहीं मिले। आपके वियोग में मैं पिया-पिया करके पुकार कर रही हूं।

वाला तमे चालता ते चार दिनडा कह्या, हांरे अमे एणी रे आसाए जोईने रह्या।
वाला अमे वचन तमारा ग्रह्या, हवे ते अवध ऊपर दिनडा गया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

शब्दार्थ—हे मेरे वालाजी! आपने गोकुल से मथुरा जाते समय चार दिन में वापस आने का वायदा किया था। हम आपके वचनों का सहारा लेकर बैठे रहे। अब तो निश्चित समय से भी ऊपर समय बीत गया है। इसलिए अब मैं पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

भावार्थ—हे धनी आपने पांचवें दिन मिलने का वायदा किया था। पहला ब्रज का, दूसरा रास का, तीसरा अरब का, चौथा श्री देवचन्द्रजी का। अब तो निश्चित समय निकल गया है और अभी भी आप आकर मिले नहीं।

वाला मारा दिनडा आसोना आव्या, हांरे घेर मेघलियो बारे रे सिधाव्या।
हांरे वन वेलडिए रंग सोहाव्या,पिउजी तमे एणे समे वृजडी कां न आव्या।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे मेरे वालाजी! आसो (कुंवार) का महीना आया है तथा वर्षा वाले बादल सब अपने घर वापस चले गए हैं। अब वन और बेलें अधिक शोभा दे रही हैं। हे पियाजी! ऐसे समय में ब्रज में क्यों नहीं आए? इसलिए अब मैं पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

वाला मारा एक वार जुओ वनडू आवी, हां रे चांदलिए जोत चढावी।
वेलडिए वनस्पति रे सोहावी, एणे समे विरहणियो कां विलखावी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे वालाजी! एक बार आकर इस वृन्दावन को देखो। चन्द्रमा की ज्योति से बेलों और वनस्पतियों की शोभा दोगुनी हो गई है। इस समय मुझ विरहिणी को क्यों रुला रहे हो? मैं तो आपके वियोग में तड़प रही हूं और पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ६ ॥

।। हेमंत रुत (कार्तिक-मगसर) ।।

राग मलार

वाला मारा हेमाले थी हेम रुत हाली, ए तो वेरण आवी रे विरहणियो ऊपर चाली।
वृजडी वीटी रे लीधी वचे घाली, पिउजी तमे हजिए कां बेठा आप झाली।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे पिया! बर्फ से ढके पर्वतों से ठण्डी हवा आ रही है। यह हवा विरहणियों को और जलाने आई है। इसने ब्रज को घेर रखा है। धनी! अब आप जिद करके क्यों बैठे हो? आते क्यों नहीं? मैं पिया-पिया कहकर पुकार रही हूं।

रे विरही तमे विरहणियो ने कां न संभारो, नंद कुंअर नेहडो छे जो तमारो।
वाला मारा दोष घणो रे अमारो, पिउजी तमे एणी विधे अमने कां मारो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे बिछुड़े प्रीतम! तुम अपनी विरहणियों को क्यों याद नहीं करते? हे नन्द कुंवर! आपका भी तो हमसे प्यार है। वालाजी! मेरे अन्दर बहुत अवगुण हैं, परन्तु आप इस तरह से हमें क्यों मारते हो? हे श्याम! मैं तो पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा कारतकियो अंगडा कापे, नाहोलिया तारो नेहडो वाले मूने तापे।
वाला मूने गुण अंग इंद्रियो रे संतापे, पिउजी विना दुखडा ते सहु मूने आपे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे मेरे वालाजी! कार्तिक मास की ठण्डी हवाओं से मेरा तन कांप रहा है। हे प्रीतम! आपका प्रेम मुझे जला रहा है। मेरा रोम-रोम मुझे दुःखी कर रहा है। जिससे पिया-पिया करके मैं पुकारती हूं।